ISSN No. : 2394-0344 Remarking : Vol-2* Issue-4*September 2015

मलिक मुहम्मद जायसी कृत कन्हावत में चरित्र–चित्रण के विविध रूप

चेनाराम
शोध छात्र,
हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
बून्दी, राजस्थान

सारांश

मलिक मुहम्मद जायसी हिन्दी की प्रेमाख्यान काव्य परम्परा के प्रतिनिधि कवि के रूप में प्रसिद्ध है। वे पद्‌मावत, अखरावट और आखिरी कलाम जैसे प्रसिद्ध काव्यों के बल पर हिन्दी साहित्य में अपना अद्वितीय स्थान बना सके हैं। उन्होंने अपने काव्यों में पात्रों का चरित्र–चित्रण कर उन्हे अमर बना दिया है। नागमति अपने विरण वर्णन के लिए हिन्दी में अमर पात्र है। 'कन्हावत' प्रसिद्ध हिन्दू कथा पर आधारित प्रबंध रचना है। जिसमें उन्होंने अपनी कु"ाल लेखनी द्वारा उसके पात्रों के चरित्र की सूक्ष्म और स्थ्ल दोनों प्रकार की रेखाओं से बड़ा अनुभूतिपूर्ण अंकन किया है। 'कन्हावत' में एकमात्र ही ऐसा पात्र है जो कथा के प्रारम्भ से अन्त तक रहते हैं वह है– कृष्ण। अन्य पात्रों में कंस, वसुदेव–देवकी, नन्दबाबा–य"ाोदा, बलराम (अर्जन), अक्रूर, राधा–चन्द्रावली, सुगनी कुब्जा और गोपियाँ इत्यादि। सम्पूर्ण कथा के पात्रों में से केवल कृष्ण का चरित्र ही ऐसा चरित्र है जिसमें हमें उत्तरोत्तर विकास के द"ान होते हैं। वह आरम्भ से अन्त तक सम्पूर्ण कथा का केन्द्र–बिन्दु और प्रेरक–"ाक्ति बना रहता है। अन्य पात्र उसी के प्रभाव क्षेत्र में चक्कर काटते दिखाई देते हैं। कवि ने पात्रों के चरित्र–चित्रण में स्वाभाविकता का परिचय दिया है। उन्होंने अपनी सूक्ष और पैनी नजर से पात्रों की मनोद"ाा के अनुकूल चरित्र विकास दिखलाया है।

मुख्य शब्द : प्रेमाख्यान, पात्र, चरित्र–चित्रण, प्रबंध काव्य, नायक–नायिका, संयोग, वियोग, विरह, धीरोदत्त, धीर ललित।

प्रस्तावना

काव्य रूपों में चरित्र–चित्रण की दृष्टि से प्रबंध काव्य सर्वोत्कृष्ट होता है। प्रबंध काव्य में पात्रों के चरित्र विकास के लिए पर्याप्त स्थान व घटनाओं का संयोजन होता है जिनमें चरित्र स्वतः घटनाओं के द्वारा प्रकट एवं विकसित होते चलते हैं। प्रबन्ध काव्य में पात्रों के चरित्र के विविध पक्ष एवं स्तर अभिव्यक्ति पाते चलते हैं और इसके माध्यम से उनके व्यक्तित्व की विषेषताएँ सामने आती है। पात्रों के व्यक्तित्व व चरित्र का स्वरूप कला कृति के रूप, लेखक की रूचि तथा योग्यता और उसकी कृति के उद्‌दे"य पर निर्भर करता है।[1] ऐतिहासिक व पौराणिक कथा काव्यों में पात्रों का स्वरूप परम्परा द्वारा गढ़ा हुआ होता है। फिर भी कवि की प्रतिभा उसके अंकन में मौलिकता तथा प्रभाव उत्पन्न करता है। इस दृष्टि से जायसी ने चरित्र का विकास पात्रों को घटना–चक्रों में डालकर परिस्थितियों द्वारा कराया है। चरित्रों का मार्मिक अं"ा–चयन तथा मनोवैज्ञानिक चरित्र–चित्रण 'कन्हावत' की वि"ाेषता है। 'कन्हावत' में एकमात्र ही ऐसा पात्र है जो कथा के प्रारम्भ से अन्त तक रहते हैं वह है कृष्ण। अन्य पात्रों में कंस एवं उनके दैत्य, वसुदेव–देवकी, नन्दबाबा–य"ाोदा, बलराम, अक्रूर, राधा–चन्द्रावली, सुगनी कुब्जा और गोपियाँ इत्यादि। सम्पूर्ण कथा के पात्रों में से केवल कृष्ण का चरित्र ही ऐसा चरित्र है जिसमें हमें उत्तरोत्तर विकास के द"ान होते हैं। वह आरम्भ से अन्त तक सम्पूर्ण कथा का केन्द्र–बिन्दु और प्रेरक–"ाक्ति बना रहता है। अन्य पात्र उसी के प्रभाव क्षेत्र में चक्कर काटते दिखाई देते हैं।

कृष्ण का चरित्र–चित्रण

प्रधान नायक के रूप में

कान्ह अर्थात् कृष्ण इस कथा का प्रधान नायक है। उसके चरित्र में 'धीरोदत्त' और 'धीर ललित' दोनों प्रकार के नायकों की चारित्रिक वि"ाष्टताओं का विचित्र समन्वय मिलता है। उसका पहला रूप एक स्वाभिमानी (य"ाु वं"ाीय) वीर क्षत्रिय यौद्धा के रूप में सामने आता है तो दूसरा रूप एक आद"ा–प्रेमी के रूप में। उसके पहले रूप के संबंध में उसे जन्म से पूर्व नारद भविष्यवाणी करते हैं कि कंस की मृत्यु कृष्ण के हाथों से ही होगी। जैसे –

(....र वाहै) चहै उपकारा।
जहा रे कंस रह परन कहारा।।
(जेहि) चिंता अरूझा मरई।
जिन्ह काहू कै चिंत न करई।।
(तोहि) हरखि सेवौं पालौ गाढा।
कहसि सोइ जिन्ह बिसमौ ठाढ़ा।।
राजा कहौं साच सुनु सोई।
दई लिखा तुमहि को होई।।
बिसुन एहिं महर औतरई।
सो तोहि मारि राज पुनि करई।।
(बहिन) तोरि देवकी अहई।
तहिकैं कोख औतरा चहई।।
जेहि क पिता बसुदेऊ रिखी।
तहिकैं हाथ मीचु तोरि लिखी।।
दुसहगीर करहिं खो, हो कीन्हा औतार।
बैरि तो तोरै घर का, खोजसि का संसार।।[2]

अतः इसी भविष्यवाणी के अनुसार कान्ह का जन्म देवकी की कोख से होता है इसी के साथ कथा का प्रारम्भ भी होता है जो विभिन्न नाटकीय मोड़ से गुजरती हुई अंत में कंस क वध तक पहुंचती है।

पुत्र के रूप में

कृष्ण के माता–पिता तो देवकी–वसुदेव थे लेकिन उसका पालन–पोषण तो य”ोदा–नन्द बाबा ने किया जिससे उनको बालक कृष्ण की अनुपम लीलाओं की आनन्दानुभूति प्राप्त हुई है। बालक कृष्ण को ज्यों ही उनके घर लाया जाता है त्यों ही वे सब लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं। वे नंद–य”ोदा के ही लाड़ले नहीं, समस्त ब्रजवासियों के भी प्रिय हो जाते हैं। जब गोपियों द्वारा ि”ाकायत करने पर बालक कृष्ण रोते हुए नन्द बाबा से कहते हैं कि ये सभी मुझे चिढ़ाती है, मेरे सिर पर मठकी रख देती है तो कोई बरबस मुझे गले लगा लेती है जैसे –

देखा हरि बिवाद तो लागा।
लीन्ह काढ़ि माथे कर पागा।।
रोवत पास नंद के आवा।
देखहु हौं यह बहुत खिझावा।।
काहँ दौरि धरी मोरी जोनी।
काहँ खिचत देहि धरि छोनी।।
काहूँ आनि मटकि सिर देहीं।
केउ बरबसहिं लाइ कंठ लेहीं।।[3]

प्रेमी और पति के रूप में

कृष्ण का प्रेम एक सच्चे प्रेमी एवं सच्चे पति का प्रेम है। उनकी अद्वितीय दिव्य गुण सौंदर्य–रा”ि, मधुर–वाणी, मुरली गान, शै”ावावस्था की नटखटी, चपलता, विनोदप्रियता और चारी (माखन) आदि नर–नारी, बालक, वृद्ध आदि को उनकी ओर समान रीति से आकर्षित करती हैं। कृष्ण के हृदय में जब प्रेम प्रकट होता है तो वे एकदम व्याकुल होने लगे तब अगस्त नामक धाय उनकी स्थिति को समझकर चन्द्रावली से मिलाती है। कृष्ण उन पर मोहित जाते हैं चन्द्रावली अपनी सखियों के संग उनको देखती है तो उनकी सखियाँ वहाँ से हट जाती है। दोनों का मिलन होता है, चन्द्रावली के आग्रह पर कृष्ण अपना विराट रूप प्रकट करते हैं जैसे –

देखत चाँद सुरूज तस सोहा।
भूलै बंसिकार सुर मोहा।।
देखि भेस चन्द्रावली कहा।
भा दुःख सोइ जो मारउँ अहा।।[4]

लोक कल्याणकारी रूप में

कृष्ण का आविर्भाव लोक–कल्याण के लिए हुआ था। जायसी ने उनके अवतार–माहात्म्य रूप का प्रद”र्ान, लौकिक लीलाओं के साथ अलौकिक लीलाओं का मिश्रण के रूप में चरित्र–चित्रण किया है। कृष्ण जगत के स्वामी, अगम, अगोचर, अविना”ाी, पूर्ण ब्रह्म और लीला मानुष सूत्रधारी है। वे अपना विराट रूप, चन्द्रावली, राधा, गोपियाँ, कंस आदि का दिखाते हैं। नारद तो स्वयं उसके चतुर्भुज रूप से परिचित था। कान्ह बाल्यकाल में पूतना, बासुकि नाग दमन, गोवर्धन गिरि धारण, कंस के दैत्यों आदि का संहार करते हैं। इतना ही नहीं गोपियों को अपने मुँह में ब्रह्माण्ड दिखाना, कुब्जा को शाप मुक्त करना, कंस का वध करना, अपने माता–पिता को बन्दीगृह से मुक्त कराना, मथुरा का राज्य कंस के पिता को सौंपना, कुब्जा के संग कुछ समय तक भोग अंत में गोरखनाथ को भोग (प्रेम) का महत्व समझाना आदि कार्य उनके अलौकिक रूप के साक्षी है। जो उनके लोक–कल्याणकारी कार्य कहे जा सकते हैं।

राधा का चरित्र–चित्रण

महाकवि मलिक मुहम्मद जायसी का 'कन्हावत' राधा–कृष्ण की लीलाओं का निकेतन है, रस का सागर है, हार्दिक प्रेमोद्गारों का भण्डार है। कन्हावत काव्य के नायक श्रीकृष्ण है, तो नायिका राधा है, जो निष्कपट है, पवित्र है, अनुरागिनी है और प्रेम की साकार मूर्ति। अतः इनका चरित्र–चित्रण निम्न रूप से किया जा सकता है–

प्रधान नायिका

राधा इस कथा–काव्य की प्रधान नायिका है। वह आरम्भ में कान्ह की प्रेमिका रहती है और फिर पत्नी बन जाती है। इसके बाद वह कृष्ण के सुख–दुःख में सदैव साथ रहती है। इसलिए वह आरम्भ से अन्त तक सर्वप्रधान नारी–पात्र बनी रहती है। इसी कारण उसे इस ग्रन्थ की नायिका माना है।

अनिन्द्य सुंदरी

कान्ह की राधा शै”ाव अवस्था से ही सुन्दर थी। कान्ह बाल्यकाल से ही राधा के साथ रास लीलाएँ किया करते थे। वह उनकी सुन्दरता पर हमे”ाा मंत्रमुग्ध हो जाया करते थे। वह सभी गोपियों में अनिन्द्य सुन्दरी थी। कान्ह से विवाहोपरान्त राधा नित्य शृंगार करती है, भाल पर बेंदी, नेत्रों में अंजन, के”ा–विन्यास, मांग में सिन्दूर लगाना, चिबुक पर तिल बनाना, मेहदी लगाना, अरगजा–लेपन, आभूषण पहनना, पुष्प धारण करना, सुगन्ध लगाना आदि। जायसी ने राधा–कान्ह की संयोगावस्था के वर्णित किए है। जिसमें राधा की सुन्दरता के सामने अप्सराएँ भो लजा जाती है।

प्रेमिका का रूप

जायसी ने कान्ह–राधा प्रेम का उनके बाल्यवस्था से ही वर्णन किया है। कृष्ण माखनचारी, गोचारण, दुष्ट–दलन के द्वारा राधा के मन में बैठ चुके थे। वह कृष्ण के प्रति एक निष्ठा भाव से प्रेम करने लगती है। जब उन्हें पता चलता है कान्ह चन्द्रावली से भी प्रेम करते

हैं। वह अपनी प्रेम की ताकत दिखाने के लिए चन्द्रावली से झगडा करती है। जैसे –

होइ समतोल जुरीं दोइ गोरी।
हार न मानहिं जोरि न जोरी।।
अति पर फुलहिं न एकौ रहे।
ओहि ओकहँ ओहि ओकहँ गहे।।
लटपटा हिंभर जोबन माँती।
कहें न छाँड़हिं एकौ भाँति।।[5]

राधा अपनी सखियों के संग श्रृंगार करके मधुपुर (मथुरा) की ओर जाती है, बीच रास्ते में कान्ह स्वयं को राजा का 'दानी' (दान लेने वाला) बताकर उनसे कहता है तुम लोग हमे"ाा दान न देकर भाग जाती हो। आज मैं तुम लोगों को दण्ड दूँगा। अन्यथा मुझसे पहचान कर लो, तुम्हें जंगल में कोई भय नहीं होगा। तब राधा उससे कहती है कि मुझे तो विधाता ने कान्ह के लिए ही बनाया है। वह अपना परिचय देती है जैसे –

कन्ह कराँ एक भेस फिरावा।
पुनि आरन मैं बैठि भुलावा।।
आनि मोर महि बेगहि, दान जाहि कर मार।
चलहु सबै संग मोरैं, लै राखौं बडसार।।[6]

वह अपने प्रेम के माध्यम से कान्ह के हृदय स्थान पा लेती है कान्ह भी उनकी सुन्दरता की प्र"ांसा किये बिना नहीं रहते हैं। कान्ह कहते हैं कि – हे राधे मुझमें–तुझमें अन्तर नहीं है, नक्षत्रों के समान भास्वर सोलह सहस्त्र गोपियों में मैं तुम्हें चाँद के समान देखता हूँ। जैसे –

मोहि–तोहि राही अंतर नाहीं।
जइस दीख पिंड परछाहीं।।
जोहि दई कर आयसु पाएउँ।
औ देखै कबिलास सिधाएउँ।।
लेइ बैठाएउँ तेहि खंड माँहाँ।
सोरह सहस गोपिता जाँहाँ।।
तेहि महँ बैठि पाठ तोहिं देखों।
नखतन्ह मांहि चन्द्र अस लेखौं।।
तोरीं जोति चढ़ा जो रंगू।
भा अजोर हौं भयेउं मयंकू।।
तौ मैं कहा कि भइ पिय रानी।
औ सब साट–पाट परधानी।।
देखि रूप तस परम भुलानेउँ।
चित्र ओतारि जगत महँ आनेउँ।
तोही हुत तूँ जो चढै चित,
जइस स्वाति बैठि पिक जोउ।
जासौ अइस बसै मन,
तासौ कौन बिछोउ।।[7]

कवि जायसी विरह वर्णन में हिन्दी साहित्य अनुपम है। पद्मावत का विरह वर्णन हिन्दी साहित्य की अद्वितीय वस्तु के रूप में माना जाता है। कन्हावत में भी ब्रज वासियों, गोपियों, राधा आदि के विरह वर्णन में सफलता प्राप्त की है। जायसी ने विरहणी राधा के चित्रण के कलात्मक चित्र अंकित किये हैं। इस प्रकार जायसी की राधा, जो पहले हमारे सामने श्रृंगारमयी नवल कि"ाोरी बनकर आती है और फिर विरह कातरा, त्यागमयी, विरहरणी बन कर हृदय पर अंकित हो जाती है।

चन्द्रावली का चरित्र–चित्रण

'कन्हावत' काव्य में स्त्री पात्रों की दृष्टि से चन्द्रावली का महत्त्व कम नही हैं। इसे इस काव्य–कथा की उप–नायिका भी माना जा सकता है। वह धौराहर पर रहती है जो सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी है। साथ ही उसकी छवि और रूप–लावण्य अनुपम है।

सुन्दरता की प्रति–मुर्ति

चन्द्रावली भी राधा जैसी सुन्दरता की प्रतिमूर्ति है। जब कान्ह के हृदय में प्रेम प्रकट होता है तब अगस्त नामक धाय उनकी हृदय भावना को समझकर, वह कान्ह को चन्द्रावली से मिलाती है तब कान्ह चन्द्रावली की सुन्दरता को देखकर मोहित हो जाते हैं। चन्द्रावली के आग्रह पर कान्ह अपना विष्णु रूप प्रकट करते जसे –

कहत सो बात भेस हरि धरा।
कीन्ह सिंगार जोग रस करा।।
कोंडर सो मेलि गियँ माला।
भएउ चतुरभुज बाल गोपाला।।
चंदन बभूत चिता बैरागी।
पदुम खीर भेरवा जहि माँगी।।
कपटै खरग चक दोइ हाथाँ।
कीन्ह बज्र मूंसल पुनि साथाँ।।[8]

प्रगाढ़ प्रेम से ओतप्रोत

अगस्त नामक धाय चन्द्रावली को कान्ह से मिलाती हुई कहती है कि ये गोपाल–गोविन्द है, तुम्हारे लिए बैरागी बने है, यदि तुम स्नेह पूर्वक अपनाओगी तो तुम्हें परमानन्द की प्राप्ति होगी। अतः इसी दिन जब चन्द्रावली कान्ह से प्रथम बार मिलती है तो वह उसके बाल बैरागी रूप को देखकर मोहित हो जाती है। इतना ही नहीं जब कान्ह उनके आग्रह पर अपना विराट रूप प्रकट करते हैं। उसी दिन वह कान्ह से प्रगाढ़ प्रेम करने लगती है और अपनी प्रगाढ़ प्रेम एवं सुन्दरता के माध्यम से कान्ह के हृदय स्थान पा लेती है। इसके पश्चात् इनका प्रेम प्रणय–भाव हमे"ाा बढ़ता रहता है और कान्ह के साथ रात–दिन भाँति–भाँति की रास लीला चलती है। इतना ही नहीं जब वह कान्ह द्वारा बाल्यवस्था में पूतना वध, बासुकि नाग दलन, गोवर्धन–पर्वत धारण, अनेक दैत्यों का वध आदि के बारे में सुनती तो उनका प्रेम कान्ह के प्रति और अटूट हो जाता है। उसके पश्चात् वह सोलह श्रृंगार करके महेन्द्र पूजा करती हुई अपने सुहाग की मनौती मांगती कि कृष्ण हमे"ाा मेरे पास रहें राधा के पास न जाएँ जैसे –

पूजै महिन्द्र चली सब नारीं।
बारह–सोरह करां सिंगारी।।
चढ़ी सुरवासन चन्द्रावली।
बातैं कहत सखिन्ह सौं चली।।
सखी सहस दोइ गौहन भई।
केलि करत मढ़–मंडप गई।।
खीर खांड घिउ पूजा कीन्हीं।
फूल हार लेइ माथैं झीनीं।।
कै पूजा चन्द्रावली,
बिनवै फिरै हुलास।
कन्ह रहहिं नित मोपहि,
जाहिं न राही बास।।[9]

चन्द्रावली प्रगाढ़ प्रणयानुभूति के माध्यम से राधा से पहले कान्ह से गंधर्व–विवाह करने में सफल हो जाती है। यथा–

भाँवर देहिं गाँठि संग जोरी।
पाछिल फेरि भएउ पौछोरी।।
देइ सो भगति आएसि कन्ह।
मढ़ी चाँद जाइ धौराहर चढ़ी।।
हरि जिउ लीन्ह गहन अस गही।
भै अचैत मन चिन्त न रही।।[10]

सपत्नी (सौत) का रूप

जायसी ने 'कन्हावत' में चन्द्रावली के व्यक्तित्व की वि"ोषता एक सपत्नी (सौत) के रूप में की है। इस बात का पता स्वयं चन्द्रावली को है कि कान्ह की प्रेमिका तो राधा है जो परस्पर बहुत प्रेम करते हैं। लेकिन अपने शारीरिक सौन्दर्य एवं बुद्धि चातुर्यता से वह राधा से पहले कान्ह से विवाह कर लेती है। इस कथा–काव्य में चन्द्रावली एकमात्र ऐसी पात्र है जो अगस्त नामक धाय के माध्यम से कान्ह से मिलकर उनकी प्रेयसी बनने में सफल होती है जिसका चरित्र सुन्दरता की प्रति मूर्ति, प्रगाढ़ प्रेम, सौत (सपत्नी), शंकालु प्रवृति, लज्जा शील, एक सच्ची गृहणी, वीरता को प्र"ांसक आदि के रूप में उभरकर पाठक के सामने आता है।

देवकी–वसुदेव

सरल एवं सहज स्वभाव

कवि जायसी ने इस कथा–काव्य में देवकी एवं वसुदेव के सरल एवं सहज स्वभाव का चित्रण किया है। इस काव्य में देवकी–वसुदेव संबंधी दो घटनाओं का ही वर्णन है प्रथम तो वह जब कंस नारद ऋषि से अपनी बहन देवकी की कोख से जन्मे बच्चे के हाथों से मौत की भविष्यवाणी सुनता है तो वह अपने जीजा–जीजी को कारागार में बंदी बना लेता है। अतः यहाँ कवि ने उनकी मानसिक स्थिति का चित्रण किया है जिसमें उनका व्यक्तित्व एक सरल एवं सहज स्वभाव में उभर कर हमारे सामने आता है। इसी तरह कारागार में कैद से पूर्व भी देवकी अपने भ्राता कंस से बहुत स्नेह रखती थी तो वसुदेव भी अपने सालाजी से सम्मानपूर्वक व्यवहार करते थे। संतान प्रेमी – एक माता–पिता का अपनी संतान के प्रति मोह होना स्वाभाविक बात है लेकिन उन्हीं के सामने उन्हीं की संतान को मार देना कितना खौफनाक दृ"य होता है। यही स्थिति देवकी–वसुदेव की थी। जिनकी संतान को पैदा होते ही कंस बर्बरतापूर्वक एक शिला पर पटककर मार देता था। अर्थात् कंस देवकी–वसुदेव की आठ संतानों को मार देता है उन में से केवल कान्ह ही देवकी के बुद्धि चातुर्य से नंद के यहाँ (अपने पति) वसुदेव द्वारा भेज दिये जाने से बच जाता है। कंस द्वारा कान्ह को मारने की अनेक योजना बनाने की जानकारी देवकी–वसुदेव को पता चलता है वे अत्यधिक दुःखी होते हैं। ईश्वर से पुत्र रक्षा की प्रार्थना करते हैं। ई"वर भक्त – दोनों पात्रों ईस्वर भक्त हैं। देवकी वसुदेव से कहती है कि ऋषि और तपस्वी हो, तुम्हारा जाप किस काम का आठ पुत्रों को कंस ने मारा, तुम्हारा एक भी पुत्र रह नहीं गया। इसे बचाओं नहीं तो कंस इसे भी मार डालेगा नन्द महर की पत्नी (य"ोदा) ने कहा कि मेरे बच्चे का ले लेगी ल जा सको तो इसे वहाँ ले जाओ। इसी तरह जब वसुदेव अपने ईष्ट का स्मरण करके नवजात f"k"kq (कान्ह) को लेकर रवाना होते हैं तो उस समय बन्दीगृह के सातों दरवाजों के ताले टूटकर स्वतः खुलने लगते हैं, और यमुना नदी के बाढ़ में पैर रखते हैं पानी घुटनों तक ही लगना और कान्ह को नन्द के यहाँ छोडना और वहाँ नन्द की नवजात f"k"kq (कन्या) को लेकर चुपचाप बन्दीगृह में लाना, इसी बीच कारागार के सभी पहरेदारियों का नींद में सोना आदि चमत्कारिक घटनाएँ देवकी–वसुदेव की ई"वरीय भक्ति का ही परिणाम कहा जा सकता है।

नन्द–यशोदा

नन्द महर ब्रजग्राम (गोकुल) के प्रतिष्ठित व्यक्ति है और उनकी धर्मपत्नी है य"ोदा देवी। वे गोधन के बड़े धनी है और उनके पास बीस सहस्त्र दुधारू गायें है सभी गायें कपिला जाति की है। ये दम्पती कृष्ण और बलराम जैसे पुत्रों को प्राप्त कर अत्यन्त प्रफुल्लित हो जाते हैं। ये दोनों भाई अपने माता–पिता को सर्व प्रकार से आनन्द पहुँचाते हैं। सरल और नि"छल स्वभाव – कवि ने नंद–य"ोदा को एक स्नेह"ील माता–पिता के रूप में चित्रित किया है। वे सरल और नि"छल स्वभाव के है। पुत्र–जन्म के अवसर पर वे वस्त्रादि दान कर आनंदित हाते हैं। वे अपने बालकों को नि"छल भाव से अक्रूर के साथ भेज देते हैं। कंस के कुचक्र पर विचार ही नहीं करते। वे अपने मित्र वसुदेव और अन्य बंधु–बांधवों से भी सद्व्यवहार करते हैं। वात्सल्य प्रेम से ओतप्रोत–नंद और य"ोदा दोनों के हृदय वात्सल्य रस से प्लावित है। वे अपने पुत्रों के अनिष्ट की कल्पना मात्र से भयभीत होते हैं। जब 'कान्ह' अपने मित्रों के साथ गेंद खेलते हैं तो गेंद यमुना नदी में गिर जाती है तो वे गेंद लाने के बहाने यमुना म कूद पडते हैं, जब वे बहुत देर तक बाहर नहीं आते हैं नन्द–य"ोदा और अन्य नागरिक बहुत दुःखी होते हैं और नावें डालकर कान्ह को ढुंढ़ते हैं। त्यागमयी भावना की प्रतिमूर्ति– नंद–य"ोदा दोनों त्याग की प्रतिमूर्ति है। वे कान्ह का पालन–पोषण करते हैं और उनके मथुरा चले जाने के बाद पुत्र वियोग जन्य दुःख को सह लेते हैं और अन्त में जब कान्ह द्वारिका जाने की बात करते हैं तो वे उनकी बात सुनकर रोने लगते हैं लेकिन वे मान जाते हैं। सारांश में यह कहा जा सकता है जायसी ने नंद और य"ोदा को सरल, स्नेह"ील, त्यागी माता–पिता के रूप में चित्रित किया है। उनके चरित्र चित्रण में जायसी को बड़ी सफलता मिली है।

बलराम

जायसी क 'कन्हावत' में बलराम का चित्रण मिलता है। बलराम कान्ह के साथी है, बड़े भाई है। वे दोनों साथ–साथ रहते हैं और कई रास लीलाएँ करते हैं। कृष्ण के समान ही बलराम भी दैत्यों का संहार करते हैं।

कुब्जा

कुब्जा कंस के दरबार में चंदन लेप का कार्य करती है। वह शारीरिक रूप से विकृत (कुबडी) होती है। और शापित जीवन व्यतीत करती है। लेकिन कृष्ण के संयोगावस्था से वह उनको शापित जीवन से मुक्त कर देते हैं उसके उपरान्त वह एक सुन्दर गोपी बन जाती है। जिसे कंस दरबार में सभी उसे आ"चर्य–जनक देखते ह। इसक पश्चात् वह कान्ह से एकनिष्ठा प्रेम करने में सफल होती है। जायसी ने सुगनी कुब्जा का चरित्र चित्रण दासता–प्रवृति, शापित जीवन, अलौकित सुन्दरी की छटा

एवं एक सच्ची प्रेमिका के रूप में किया है। जिसके परिणाम स्वरूप काव्य में रोचकता बन रही है।

कंस

प्रबंध काव्य के फल की दृष्टि से 'कंस' 'कन्हावत' कथा का खलनायक सिद्ध होता है। क्योंकि भरसक प्रयत्न करने पर भी उसे अपनी मौत पर विजय की प्राप्ति नहीं हो पाती। वह नायक कान्ह का विरोधी है। अतः इस काव्य में इनका चरित्र प्रताप"ााली, शक्ति"ााली और वैभव"ााली, डरपोक प्रवृति, छली और वि"वासघाती और लोभी आदि के रूप में उभर कर सामने आता है। जायसी ने कंस को सम्पूर्ण पृथ्वी का प्रताप"ााली, शाक्तिमान, वैभव"ााली शासक के रूप मे लंका के राजा रावण के समान बताकर चित्रित किया है जसे –

मथुरा नगर दयी जो साजा।
कंस राज कीन्हौं बड़ राजा।।
एक छत राज तइस ओहि दीन्हाँ।
रावन राज लंक जस कीन्हां।।
जित जग दानवँ राकक्ष देवा।
सबै करहि मानै तौरि सेवा।।
सूक आइ मंत्री भा आगैं।
नारद रहै कान नित लागैं।।
सात दीप औ नौ खंड ताई।
फिरी आन सगरी दुनियाई।।
बासुखि इंद्र कीन्ह मन संका।
काँपा डरहिं भिभीखन लंका।।
सुर नर मुनि गुनि गंधरब,
सबै कीन्ह वह साथ।
कीन्हें रहै रजायसु,नित उठि
नावहिं माथ।।[11]

डरपोक प्रवृति

'कन्हावत' म कंस एक प्रताप"ाली, शक्तिमान और वैभवशाली चरित्र सामने आता है तो दूसरी तरफ वह अपनी मौत से भयभीत घबराया हुआ हमारे सामने प्रकट होता है। अर्थात् एक रात कंस ने सपने में देखा कि एक पुरूष बं"ाी बजाते हुए काल बन कर आया है, जिससे वह डर गया और ऐसा लगा कि उसके प्राण काढ़ ले गया। जैसे –

एक रात सोवत रहा कंसू।
आवा पुरूख बजावत बंसू।।
ऊपर चढ़ि तस मारसि हाका।
डरपा कंस बोलत मुख थाका।।
चानक आइ भया, फूनि चाँपा।
सुनतै पर अखि कह करै डर काँपा।।[12]

छली और विश्वासघाती

कंस एक छली, प्रपंची और वि"वासघाती है। वह कई योजनाओं में कान्ह को छल और वि"वास में लेकर उसका वध करने का प्रयास करता है। जैसे– पूतना द्वारा कान्ह को स्तनपान कराना, नन्द से सहस्त्र दल कमल की मांग करना अथवा कान्ह को बासुकि नाग से डसाना, कान्ह के चरवाही स्थान पर दैत्यों से पत्थरों की वर्षा करना, नंद–य"ाोदा को बंदीगृह में डालना, कंस द्वारा गोकुल की सम्पूर्ण गोपियों से विवाह रचाने की साजि"ा रचना, रंग–भूमि में कान्ह व ग्वालाओं के साथ मल्लों से युद्ध कराना, अन्त में कान्ह को स्वागत के लिए बुलाना और गढ़ के सातों पौरी पर दैत्यों से युद्ध कराना एवं कुबल नामक हाथी से कुचलवाना आदि।

अन्य पात्र

रूक्मिणी

जायसी की रूक्मिणी भारतीय जनता के प्रिय पात्रों में एक है। जायसी ने अत्यन्त प्रभाव"ााली रीति से उनका चित्रांकन किया है। वह कान्ह के प्रति अत्यंत प्रेम, पतिवत्ता धर्म का निर्वाह, अपनी सखियों में सबकी प्रिय, माता–पिता और ऋषियों के प्रति आदर एवं श्रद्धाभाव रखने वाली, रूप सौन्दर्य की साक्षात् देवी, चित्ताकर्षण और कान्ह की वास्तविक पत्नी होने का गौरव आदि चरित्र से सुसज्जित है। गोपियाँ – कवि ने गोपियों को कृष्ण की प्रेमिका के रूप में वर्णित किया है। वे कान्ह की अनुपम बाल–लीलाओं को देखकर हर्ष–चित्त हो जाती है। साथ ही कान्ह संयोगावस्था में उनके संग रास–लीलाएँ करती है। और वियोगावस्था के विरह से जल उठती है। ग्वालें – जायसी ने कन्हावत में ग्वालें को कान्ह के सखा (मित्रों) के रूप में दर्शाया है। कवि ने इस काव्य मे किसी ग्वाला वि"ोष का नाम नहीं बताया है। अतः वे सभी कान्ह के सुख–दुःख सहायक बनते हैं। जिनको सच्चे मित्र, वि"वास पात्र, वीर योद्धा, आत्म वि"वासी, परोपकारी, सम्पूर्ण मानवीय स्वभावों की प्रति मूर्ति आदि चरित्र–चित्रण कवि ने किया है। सुदामा – 'कन्हावत' में सुदामा का चरित्र कान्ह का परम मित्र के रूप में निरूपित हुआ है। अक्रूर – अक्रूर का चरित्र एक संदे"ा–वाहक के रूप में हमारे सामने आता है क्योंकि अक्रूर कंस का कर्मचारी है जो कंस के अत्याचारी शासन से भयभीत है। और कंस के आदे"ाानुसार कान्ह को दो बार गोकुल से मथुरा लाने में सफल होता है अतः इनका चरित्र स्वामी भक्त, एक मित्र, के रूप में दर्"ाित है। सुक एवं नारद – सुक–नारद दोनों कंस के एक–एक मंत्री के रूप में सामने आते हैं। अतः इनका चरित्र पराम"ादाता, भविष्यवाणी कर्ता, दा"ानिक, कूटनीतिज्ञ आदि रूपों प्रकट होता है। दुर्वासा ऋषि – इनका चरित्र एक भूखे विद्वान ऋषि के रूप है जो यमुना जल में गुप्त रहते हैं। गोपियों द्वारा बनाये गए सुगंधित व्यंजनों की खु"ाबू से जागृत होकर, भरपेट भोजन करते हैं उसके उपरान्त गोपियों को सदा सुहागिन एवं पुत्रवती होने का आ"ाीर्वाद देते हैं। गोरखनाथ – कवि ने कन्हावत में गोरखनाथ को योग का समर्थन एवं भोग की भर्त्सना करने वाले के रूप में वर्णित किया है। वृद्ध ऋषि – 'कन्हावत' के अन्तिम भाग में एक वृद्ध ऋषि का वृतान्त आता है जिसमें वह कान्ह से अपनी सेवा के लिए एक ग्वालिन (गोपी) की मांग करता है। कान्ह द्वारा सूनी सेज दिखने पर किसी गोपी को ले जाने के लिए कहते हैं। ऋषि को किसी गोपी की सेज सूनी नहीं दिखाई देती है। तो वह वहाँ से चला जाता है। अतः इस ऋषि का चरित्र एक भोगी, ज्ञानी, क्रोधी आदि के रूप में उभर कर आता है।

'कन्हावत' के प्रमुख पात्रों का यह वि"लेषण इसकी चरित्र–योजना को स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त है। यद्यपि इसमें थोड से पात्र और ऐसे है जो कथा मे अपना न्यूनाधिक महत्व रखते हैं, परन्तु चरित्रांकन को दृष्टि से उन्हें अपूर्ण ही माना जायेगा। जायसी ने उपर्युक्त वि"लेषित पात्रों को ही अधिक महत्व दिया है और अपनी कु"ाल लेखनी द्वारा उनके चरित्र की सूक्ष्म और स्थूल

दोनों प्रकार की रेखाओं से बड़ा अनुभूतिपूर्ण अंकन किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दो साहित्य को"ा सम्पादक– धीरेन्द्र वर्मा:, प्रका"ाक– ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी तृतीय सं. 1985
2. कन्हावत, सम्पादक– डॉ. "िाव सहायक पाठक, प्रका"ाक – साहित्य भवन प्रा. लि., इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1981 ई., छन्द – 36
3. कन्हावत, सम्पादक– डॉ. "िाव सहायक पाठक, प्रका"ाक – साहित्य भवन प्रा. लि., इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1981 ई., छन्द – 95।
4. कन्हावत, सम्पादक– डॉ. "िाव सहायक पाठक, प्रका"ाक – साहित्य भवन प्रा. लि., इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1981 ई., छन्द – 114, पंक्ति 1–2
5. कन्हावत, सम्पादक– डॉ. "िाव सहायक पाठक, प्रका"ाक – साहित्य भवन प्रा. लि., इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1981 ई., छन्द – 160, पंक्ति 1–3
6. कन्हावत, सम्पादक– डॉ. "िाव सहायक पाठक, प्रका"ाक – साहित्य भवन प्रा. लि., इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1981 ई., छन्द – 217, पंक्ति 1 व 8–9
7. कन्हावत, सम्पादक– डॉ. "िाव सहायक पाठक, प्रका"ाक – साहित्य भवन प्रा. लि., इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1981 ई., छन्द – 260
8. कन्हावत, सम्पादक– डॉ. "िाव सहायक पाठक, प्रका"ाक – साहित्य भवन प्रा. लि., इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1981 ई., छन्द – 129, पंक्ति 1–4
9. कन्हावत, सम्पादक – डॉ. "िाव सहायक पाठक, प्रका"ाक – साहित्य भवन प्रा. लि., इलाहाबाद, प्रथम सस्करण 1981 ई., छन्द – 146, पंक्ति 4–9
10. कन्हावत, सम्पादक – डॉ. "िाव सहायक पाठक, प्रका"ाक – साहित्य भवन प्रा. लि., इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1981 ई., छन्द – 166, पंक्ति 1–3
11. कन्हावत, सम्पादक – डॉ. "िाव सहायक पाठक, प्रका"ाक – साहित्य भवन प्रा. लि., इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1981 ई., छन्द – 16, पंक्ति 2–9
12. कन्हावत, सम्पादक – डॉ. "िाव सहायक पाठक, प्रका"ाक – साहित्य भवन प्रा. लि., इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1981 ई., छन्द – 60, पंक्ति –3